Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

महाभारत में वास्तु शास्त्र विषयक चिन्तन

डॉ0 वन्दना द्विवेदी
असि0 प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
नवयुग कन्या महाविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

शोध आलेख सार– महाभारत में स्थापत्यकला से सम्बद्ध जितनी सामग्री मिलती है, वह परवर्ती वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थों की रचना में उपजीव्यता प्रदान करती है। विशेषकर नगर, प्रसाद आदि एवं उनकी सुरक्षा के उपाय जैसे प्राकार. परिखा, अट्टालक, दुर्ग आदि की रचना एवं नगरादि के देवतुल्यीकरण एवं सौन्दर्यीकरण जैसे विषयों के लक्षण-निर्धारण में महाभारत के तत्तत् वर्णनों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

मुख्य शब्द– महाभारत, वास्तुशास्त्र, स्थापत्यकला, संस्कृतभाषा, सभ्यता, दार्शनिक विचार, सामाजिक, इतिहास।

'महाभारत' संस्कृतभाषा में लिखा गया महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। एक लाख श्लोकों वाला यह ग्रन्थ तत्कालीन भारतवर्ष के इतिहास, सभ्यता, दार्शनिक विचार, सामाजिक और भौतिक दशा आदि की झलक प्रस्तुत करता है। भारतीय अर्थनीति, राजनीति तथा अध्यात्मशास्त्र के सिद्धान्तों का सारांश बड़ी सुन्दरता से इसमें वर्णित है। मानवजीवन से सम्बद्ध सभी विषयों का समावेश इस ग्रन्थ में दृष्टिगोचर होता है। रामायण और महाभारत जिस प्रकार परवर्ती काव्यों के उपजीव्य रहे हैं, उसकी प्रकार वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थों के भी ये उपजीव्य ग्रन्थ रहे हैं।

इस विशाल ग्रन्थ में भारतीय वास्तुकला की उन्नत अवस्था का निदर्शन हुआ है। इसमें नगरों, दुर्गों, आदि का जो विस्तृत वर्णन हुआ है, उससे प्रेरणा लेकर परवर्ती वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थकारों ने अपने-अपने ग्रन्थों की रचना की है।

प्रस्तुत पत्र में महाभारत में वर्णित कतिपय नगरों, दुर्गों भवनों आदि के आलोक में प्रमुख वास्तुलक्षणग्रन्थों – 'मानसार', 'समराङ्गणसूत्रधार' आदि का परीक्षण करने का प्रयास किया गया है।

1- नगर वर्णन

महाभारत के इन्द्रप्रस्थ और हस्तिनापुर के वर्णन में वास्तुकला सम्बन्धी जो सामग्री उपलब्ध होती है, वह परवर्ती वास्तु-लक्षण ग्रन्थकारों का उपजीव्य रही है। महाभारत में भवनों, नगरों, दुर्गों आदि की सुविधा, दृढ़ता, सुरक्षा आदि की दृष्टि से जो उपाय अथवा साधन बताये गये हैं, उन्हीं विचारों को व्यवस्थित एवं विस्तुत रुप देकर मानसर, समराङ्गणसूत्रधार आदि वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थों की रचना हुई है।

1.1 इन्द्रप्रस्थ वर्णन

यह कुरुजनपद की राजधानी थी। इस नगर का निर्माण पाण्डवों ने खाण्डववन को जलाकार किया। महाभारत काल में यह एक भव्य, सुव्यवस्थित एवं वैभव सम्पन्न नगर था। इन्द्रप्रस्थ का क्षेत्रफल इक्कीस मील था। महाभारत के आदि पर्व में इस नगर का वर्णन करते हुए नगर की इन विशेषताओं का उल्लेख हुआ है। यह नगर विस्तृत परिखाओं से घिरा हुआ था। इसके चारों ओर उच्च प्रकार विद्यामन थे। प्रकार में अट्टालक तथा द्वार (गोपुर) बने हुए थे। प्राकार विध्वंसकारी शस्त्रों से सुसज्जित थे।1

धवल और उत्तुंग भवनों के कारण इस नगरी की शोभा दर्शनीय थी।2 इस नगरी में सभी भाषाओं के बोलने वाले लोग रहते थे। यहाँ सभी प्रकार के कारीगर भी रहते थे। नगर के विभिन्न भागों में यथास्थान मनोहर चित्रशालाओं बनी हुई थीं। यहां कई वाटिकाएं थीं. जिन में विविध प्रकार के वृक्ष आरोपित थे।3 यहाँ स्थित सरोवरों का जल खिले हुए कमलों से सुगन्धित हो गया था। हंस, कारण्डव तथा चक्रवाक आदि पक्षियों के कारण उनकी शोभा द्विगुणित हो रही थी। नगर के नागरिक सुशिक्षित, सभ्य तथा धार्मिक प्रवृत्ति के थे। नाना प्रकार के वृक्षों, फूलों तथा पक्षियों आदि के द्वारा यह नगरी अमरावती की शोभा का स्मरण करा रही थी।

1.2. हस्तिनापुर

हस्तिनापुर की स्थापना महाभारत युद्ध से पूर्व की गई थी। यह पाण्डवों की राजधानी थी। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में इसका नाम हास्तिनपुर कहा है। पतञ्जलि के अनुसार यह नगर गड़गा के तट पर बसा हुआ था।4

हस्तिन् नामक व्यक्ति द्वारा प्रथमतः इसकी नींव डाली गई थी। यह नगर अनेक प्रकार के शस्त्रों से युक्त था, अतः इसके भीत शत्रुओं का प्रवेश अत्यन्त कठिन था। इसके प्राकार में गोपुर बने हुए थे, जो बहुत ऊँचे थे। नगर के भीतरी भाग राजमार्गों द्वार विभक्त था। मार्गों के दोनों ओर हर्म्य, प्रासाद तथा तुकाने सुशोभित थीं। नगर के मध्यभाग में राजमहल का निर्माण किया गया था। यहाँ पर अनेक सरोवर तथा उद्यान भी थे। यहाँ के विद्वान् नागरिक होमपरायण तथा यज्ञादि में श्रद्धा रखते थे धन-धान्य से सम्पन्न तथा धर्मनिरत लोगों से युक्त इस नगर की शोभा इन्द्र लोक के समान थी।

उपर्युक्त महाभारत के इन्द्रप्रस्थ तथा हस्तिनापुर वर्णन परवर्ती वास्तुलक्षणकारों को नगरादि के लक्षण निश्चित करने में प्रर्याप्त सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

2.1नगर-योजना

प्राचीन भारत में पुरनिवेश का सम्पूर्ण कार्य पूर्वनियोजित योजना के अनुरुप होता था। महाभारत के अध्ययन से यह विदित होता है कि अन्द्रप्रस्थ नगर की योजना उसके निर्माण कार्य से पूर्व ही बना ली गई थी। जिस समय युधिष्टिर ने इन्द्रप्रस्थ नगर को बसाया उस समय उन्होंने व्यास तथा कृष्ण आदि प्रतिष्ठित जनों को आमन्त्रित करके आरम्भिक उत्सव किया और नगर के लिय नियत भूमि पर सूत्र-मापन से इस बात का निश्चय किया कि परिखा-प्राकार-राजप्रासाद-गोपुर एवं चत्वर तथा वीथी आदि कहाँ-कहाँ रहेंगे। इस कार्य को नगर मापन कहा जाता था। इस ग्रन्थ में नगर-मापन सम्बन्धी प्रधान शिल्पी को 'विश्वकर्मा' कहा गया है। द्वारका के वर्णन-प्रस्ड्ग में यह स्पष्ट रुप से उल्लेख किया गया है कि इस नगर का निर्माण विश्वकर्मा ने किया था।5

3.1राजधानी वर्णन

महाभारत के शान्तिपर्व में राजधाना के लिए अपेक्षित विशेषताओं का वर्ण करते हुए लिखा गया है- राजा को ऐसे नगर में अपनी राजधानी बनानी चाहिए, जिस नगर में किलो हो, पर्याप्त हथियारों से सुसज्जित हो, जमीन उपजाऊ हो, चारों ओर कोट और खाई हों, जहाँ हाथी घोड़े रथादि खूब हों, जहाँ विद्वान् कारीगर

और विश्वस्त प्रजा रहती है, जहाँ कई वीर और लड़ाकू जातियों का वास हो, जिसका व्यापार खूब उन्नत हो, जो सब ओर से सुरक्षित और सुन्दर हो. जिसके निवासी वीर और धनी हों. जिसमें वेद-पाठ उत्सव और सभायों होती . जहाँ देवताओं की सदा पूजा होती हो। इन विशेषताओं से युक्त नगर में ही राजा को अपनी सेना कोष और व्यापार को बढ़ाना चाहिए। उसे प्रजा और नगर के सब दोषों का निवारण करना चाहिए।6

राजधानी के लिए उपयुक्त नगर की जिन विशेषताओं का यहाँ चित्रण हुआ है, परवर्ती वास्तुग्रन्थों में उनका यथावत् ग्रहण किया गया है।

4.1सभा-गृह-निर्माण

महाभारत में हमें गृह-निर्माण कला की उन्नत अवस्था के दर्शन होते है। खाण्डव वन के दाह के पश्चात् जो दुर्ग बनवायां गया था, उसके भग्नावशेष आज भी उपलब्ध होते है। इस दुर्ग में मय नामक असुर जाति के स्थापत्यविद् ने जिस गौरवरपूर्ण राजसभा का निर्माण किया था, उसका वर्णन ऋषिवर व्यास ने इन शब्दों में किया है— 'उस राजसभा के वृक्षों को सोने द्वारा सजाया गया था। उसकी लम्बाई दस हजार हाथ थी। उसके भवन अग्नि, चाँद, और सूर्य के समान चमकते थे। उसकी ऊँची अट्टालिकाओं ने बादल की भंति आकाश को घेर रखा था। उसमें लगाया हुआ सम्पूर्ण सामान अत्यधिक उत्तम था, उसके कोट में, सुन्दर पत्थर लगे थे। विश्वकर्मा ने उसके लिए नाना प्रकार के चित्र तैयार किए। इस भवन की तुलना में संसार में कोई अन्य भवन नहीं था। उसकी रक्षा के लिए बड़े-बड़े बलवान् योद्धा नियुक्त किये गये थे। इसके आँगन में एक तालाब बनाया गया, इसकें कृत्रिम लतायें बनाई गईं, इन लताओं के पत्ते वैदूर्यमणि निर्मित थे, इनकी तन्तुएं अन्य मणियों से और फूल सोने से बनाये गये थे। इस तालाब में सुगन्धित पानी भरा रहता था। इस तालाब में नकली मछलियाँ और कुछ कछुए भी थे। इस तालाब की सीढ़ियां बिल्लौरी पत्थर की थीं। विचित्र बात यह थी कि यह तालाब पानी से पूर्णतः भरे होने पर भी यह एक जलरहित सुन्दर वाटिका के समान प्रतीत होता था। इस तालाब के चारों ओर सुन्दर चबूतरे बने हुए थे। इस सुन्दर तालाब को देखकर सभी राजा लोग धोखा खा जाते थे। इस विशाल सभा भवन के चारों ओर सुगन्धित फूलों से लदे हुए हुए सुन्दर वृक्ष थे। इस सभा भवन के चौदस (14) मासों में तैयार कर इसकी सूचना मय ने राजा युधिष्ठिर को दी।7

इसी सभाभवन में विश्वकर्मा ने एक विचित्र चमत्कार दिखाया था। उसने स्फटिकों द्वारा एक ऐसा फर्श बनवाया था. जो पानी से भरा हुआ तालाब प्रतीत होता था। और ऐसे तालाब बनवाये थे. जो जलपूर्ण

होने पर भी सूखे फर्श के समान जान पड़ते थे। एक ऐसे ही तालाब में दुर्योधन गिर पड़ा था, एक सूखे फर्श पर वह कपड़े उठाकर चला था।

इसी प्रकार ऐसे दरवाजे बनवाये थे, जो खुले होने पर दीवार के समान प्रतीत होते थे, वहीं दूसरी ओर दीवारों के कुछ भाग इस प्रकार बनाए गये थे जो खुले हुए फाटकों के समान प्रतीत होते थे। दुर्योधन ने इससे भी धोखा खाया था। महाभारत के समय में सब शिल्प के अद्‌भुत चमत्कार उपलब्ध होते हैं।

इस संक्षिप्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महाभारत में स्थापत्यकला से सम्बद्ध जितनी सामग्री मिलती है, वह परवर्ती वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थों की रचना में उपजीव्यता प्रदान करती है। विशेषकर नगर, प्रसाद आदि एवं उनकी सुरक्षा के उपाय जैसे प्राकार. परिखा, अट्टालक, दुर्ग आदि की रचना एवं नगरादि के देवतुल्यीकरण एवं सौन्दर्यीकरण जैसे विषयों के लक्षण-निर्धारण में महाभारत के तत्तत् वर्णनों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इतना ही नहीं मयमत, मानसार, समराङ्गणसूत्रधारादि के कई अध्याय (जैसे मयमत का अ0 10, 15, 29, 30, 69, 70) महाभारत एवं वाल्मीकि रामायण की सामग्री से पूर्णतः अनुप्रेरित एवं प्रभावित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- महाभारत आदि पर्व अ.-199
चतुर्दिक्ष चतुर्द्वारं गौपुरैश्च समान्वितम्।

2- पाण्डुरै र्भवनोत्तमैः। महाभारत आदि पर्व।19

3- उद्यानानि च रम्याणि नगरस्य समन्ततः। वही आदि पर्व अ. 199

4- आनुगड़गम् हास्तिनपुरम्-महाभाष्य 2/1/16

5- द्वारकामावृतां रम्यां सुकृतां विश्वकर्मणा। महाभारत सभापर्व-57

6- महाभारत शान्तिपर्व अ. 86,6-11

7- महाभारत सभापर्व-3-22-38